

भगत नामदेव – सबद ५६
सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥
रागु मलार, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १२९२

सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥
भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जाँ चै घरि दिग दिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्तसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥
जाँ चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी ॥
सु ऐसा राजा सी नरहरी ॥ १ ॥
जाँ चै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुखु डाँवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥
जाँ कै घरि ईसरु बावला जगत गुरु तत सारखा गिआनु भाखीले ॥
पापु पुँनु जाँ चै डाँगीआ दुआरै चित्त गुपतु लेखीआ ॥
धरम राइ परली प्रतिहारु ॥
सु ऐसा राजा सी गोपालु ॥ २ ॥
जाँ चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥
सरब सासत बहु रूपीआ अनगरुआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥
चउर ढूल जाँ चै है पवणु ॥
चेरी सकति जीति ले भवणु ॥
अंड टूक जा चै भसमती ॥
सु ऐसा राजा तृभवण पती ॥ ३ ॥
जाँ चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥
अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥
नख प्रसेव जा चै सुरसरी ॥
सपत समुंद जाँ चै घड़थली ॥
एते जीअ जाँ चै वरतणी ॥
सु ऐसा राजा तृभवण धणी ॥ ४ ॥

जाँ चै घरि निकट वरती अरजनु धू प्रहलादु अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥
एते जीअ जाँ चै हहि घरी ॥
सरब बिआपिक अंतर हरी ॥
प्रणवै नामदेउ ताँ ची आणि ॥
सगल भगत जा चै नीसाणि ॥५॥१॥

सार: यद्यपि मनुष्य की दृष्टि में ब्रह्मांड अत्यंत विशाल दिखाई दे सकता है, फिर भी, वह उस असीम और अक्षय वास्तविकता की एक सीमित अभिव्यक्ति ही है, जिसे स्थान, समय या सोच के दायरे में पूरी तरह समाहित नहीं किया जा सकता। हर नई खोज हमारी समझ को तो बढ़ाती है लेकिन साथ ही यह भी दिखाती है कि अभी भी कितना कुछ हमारी समझ से दूर है। यह अनुभूति हमें विनम्र बनाती है और याद दिलाती है कि अस्तित्व का रहस्य इंसानी समझ की सीमाओं से कहीं बड़ा है। यह ज्ञान की हमारी खोज को कम करने के बजाय, उसे आश्चर्य, खुलेपन और लगातार नई खोजों के सफ़र में बदल देता है। जब हम भ्रम को छोड़ देते हैं, तब हमारा मन उस अनंत सत्ता के प्रति ग्रहणशील हो जाता है जो प्रत्येक सीमित रूप में शांतिपूर्वक व्याप्त है। इस समझ के साथ, हम ब्रह्मांड को सिर्फ सच्चाई का पूरा रूप नहीं, बल्कि उस असीम एकता की खुलती अभिव्यक्ति के रूप में देखने लगते हैं जिससे सारा अस्तित्व पैदा हुआ है।

सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥

मैं उस सर्वव्यापी सत्ता की सेवा करता हूँ, जो असीम और पवित्र है। यह ऐसी भक्ति का प्रतीक है जिसे सामाजिक पहचान, विरासत या बाहरी पवित्रता के पैमानों से सीमित नहीं किया जा सकता।

भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥१॥ रहाउ ॥

संत-स्वभाव वाले जिस भक्ति के दान की याचना करते हैं, वह मुझे भी प्राप्त हो। आध्यात्मिक लोग जिस भक्ति के दान की कामना करते हैं, वह प्रदान करें। यह आत्म-कृपा और आंतरिक ग्रहणशीलता की ओर संकेत करता है, यही वह गुण हैं जिन्हें पाकर व्यक्ति उस सहज शक्ति से जुड़ा रह सकता है। (१)(विराम)

जाँ चै घरि दिग दिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥

जिसका निवास-स्थान आनंद के स्वर्गीय लोक की तरह भव्य और शानदार ढंग से सजा हुआ दिखाई देता है। जिसमें सातों लोक भरपूर माला में समाए हुए हैं। यह ऐसे विशाल अंतर्मन को दर्शाता है जिसमें आनंद और संतोष का लोक समा सकता है।

जाँ चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी ॥

इस अवस्था में, भौतिक संपत्ति एक सेवक की तरह काम करती है, चाँद और सूरज दीयों की तरह चमकते हैं और समय एक विनम्र पहरेदार की तरह आज्ञा का पालन करता है।

सु ऐसा राजा स्त्री नरहरी ॥ १ ॥

यह नकारात्मकता को मिटाने वाली, सर्वोच्च सत्ता का प्रतीक है। यह उस परम शक्ति को दर्शाता है जो कई शक्तियों में से एक नहीं है बल्कि वह गहन स्रोत है जिसके भीतर हर शक्ति पैदा होती है, चलती है और अंततः उसी में वापस लौट जाती है। (१)

जाँ चै घरि कुलालु ब्रह्मा चतुर मुखु डाँवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥

जिसके घर में चार मुख वाले ब्रह्मा, रचनाकार- कुम्हार हैं जिन्होंने संसार के पात्रों को आकार दिया है। यह संकेत करता है कि सृजनात्मक बुद्धि एकत्व के भीतर काम करने वाला एक साधन है, वह सृष्टि को अभिव्यक्त करती है लेकिन उस पर स्वामित्व का दावा नहीं करती।

जाँ कै घरि ईसरु बावला जगत गुरु तत सारखा गिआनु भाखीले ॥

जिसके घर में शिव, स्वतंत्र-स्वभाव और सर्वव्यापी गुरु के रूप में ज्ञान का सार बताते हैं। यह प्रकृति के परिवर्तनकारी नियम को सार्वभौमिक ज्ञान के शिक्षक के रूप में देखता है।

पापु पुँनु जाँ चै डाँगीआ दुआरै चित्र गुप्त लेखीआ ॥

जिसके दरबार में पाप और पुण्य गदा-धारी सेवक हैं और द्वार पर चित्रगुप्त, आत्म-चिंतन के प्रतीक के रूप में लेखा-जोखा लिखते हैं। यह दर्शाता है कि हमारे कर्मों के पीछे की मंशाएँ और उनके परिणाम स्वयं अपना लेखा प्रस्तुत करते हैं, यहाँ कोई बाहरी न्यायाधीश हमें दोषी ठहराने के लिए नहीं बैठा है।

धरम राइ परली प्रतिहार ॥

धर्म राय, हमारी अंतरात्मा ही सही-गलत का फैसला करने वाली है, यह नकारात्मकता को समाप्त करती है और एक सतर्क पहरेदार की तरह खड़ी रहती है। यह नैतिक नियम को आंतरिक सीमा के रूप में दिखाता है जहाँ कर्मों का सामना उनके स्वाभाविक नतीजों से होता है।

सुो ऐसा राजा श्री गोपालु ॥२॥

ऐसे हैं वह सर्वोच्च शासक जिनकी उपस्थिति सर्वव्यापी है और जिन्हें श्री गोपाल कहा जाता है। इसका अर्थ है कि एक ही वास्तविकता कई कार्यों के माध्यम से प्रकट होती है, फिर भी, वह एक व्यवस्था बनी रहती है जो समस्त अस्तित्व का पोषण करती है, उसे नियंत्रित करती है और उसे धारण करती है। (२)

जाँ चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥

जिनके दरबार में दिव्य संगीतकार और ऋषि-मुनि विनम्र गायकों के रूप में आकर गुणगान करते हैं। यह दर्शाता है कि ज्ञान, सहज-वृत्ति, अभिव्यक्ति और अंतर्दृष्टि जैसी सभी क्षमताएँ उस व्यापक पूर्णता के सामने अप्रधान हो जाती हैं, जिसके भीतर उनका उदय होता है।

सरब सासल बहु रूपीआ अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछै ॥

सभी शास्त्र अपने अनेक रूपों में ऐसे अभिनय करते हैं मानो वह किसी रंगमंच के पाल हों जहाँ संसार की विभिन्न आवाज़ें निरंतर गूंजती रहती हैं। यह सिद्धांतों के उस नाटक को दर्शाता है, जहाँ ज्ञान,

बहस और प्रभावशाली अभिव्यक्ति का दायरा अनंत रूप से बढ़ सकता है फिर भी, वह सब एक ही मूल वास्तविकता की भीतरी गतिविधियाँ ही बनी रहती हैं।

चउर ढूल जाँ चै है पवणु ॥

हवा स्वयं ही श्रद्धा-भक्ति का चँवर डुलाती है। यह पुष्टि करता है कि प्रकृति के तत्व स्वयं अस्तित्व की एक शक्ति हैं और सृष्टि में कोई भी वस्तु, श्रद्धा के दायरे से बाहर नहीं है।

चेरी सकति जीति ले भवणु ॥

सृजन की शक्ति सभी लोकों में एक नियंत्रक बल के रूप में कार्य करती है। यह प्रतीक है कि सृष्टि चाहे कितनी भी विशाल और भव्य क्यों न हो, वह उस सर्वव्यापी ऊर्जा की ही अभिव्यक्ति है।

अंड टूक जा चै भसमती ॥

यह ब्रह्मांड उस अनंत स्रोत में धूल के एक कण के समान है। यह दर्शाता है कि मानवीय दृष्टि में ब्रह्मांड चाहे कितना भी विशाल क्यों न लगे, वह उस असीम वास्तविकता की केवल एक सीमित अभिव्यक्ति ही है।

सुो ऐसा राजा तृभवण पती ॥३॥

ऐसी है वह सर्वव्यापी सर्वोच्च सत्ता, जो तीनों लोकों की स्वामिनी है। यह संकेत करता है कि आंतरिक वास्तविकता अनुभव की सभी परतों- स्थूल, सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक, में व्याप्त है और उन्हें किसी विभाजन के बिना अपने भीतर समेटे हुए है। (३)

जाँ चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥

जिसके घर में पौराणिक कछुआ, कूर्म शय्या का आधार है और हज़ार सिरों वाला नाग, वासक बिस्तर की डोरियों के रूप में स्वयं को बुनता है। यह अस्तित्व के हर पहलू के नीचे स्थिरता और सहारे को दर्शाता है, सब कुछ चेतना की ही निरंतरता में समाहित है।

अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥

अनगिनत प्रकार की वनस्पतियां वहां सेवा करने वाले माली की तरह हैं और असंख्य बादल पानी लाने वाले, पनिहारिन हैं। यह दृश्य दिखाता है कि प्रकृति की शक्तियां स्वतंत्र रूप से या बेतरतीब ढंग से काम नहीं करतीं, विकास, पोषण और नवीनीकरण- सभी ऐसी पोषणकारी बुद्धि की अभिव्यक्तियाँ हैं जो समस्त जीवन को धारण करती है।

नख प्रसेव जा चै सुरसरी ॥

जिसके नाखून के पसीने से पवित्र नदी प्रवाहित होती है। यह पवित्र और अपवित्र की उन धारणाओं को निरस्त करता है जिनमें उस विशाल दिव्य और पोषणकारी सत्ता के केवल कुछ तत्वों को ही पवित्र माना जाता है।

सपत समुंद्र जाँ चै घड़थली ॥

सात समुद्र इसके पानी के घड़े हैं। यह कृतज्ञता का भाव दिखाता है जिसमें विशालता सहजता से एकता में समाई हुई है।

एते जीअ जाँ चै वरतणी ॥

सारी सृष्टि उन तत्वों की तरह है जो इसके भीतर से निकलते हैं। यह सभी जीवनों को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में दिखाता है जहाँ हर रूप पूरी व्यवस्था में कोई न कोई भूमिका निभाता है।

सुो ऐसा राजा तृभवण धणी ॥४॥

ऐसी है वह सर्वोच्च सत्ता, जो तीनों लोकों की स्वामी है। यह ऐसी व्यवस्था की ओर इशारा करता है जो अस्तित्व और अनुभव की हर परत में व्याप्त है। (४)

जाँ चै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥
उनके निवास के पास ही, एकाग्र समझ के प्रतीक अर्जुन, अटूट दृढ़ता के प्रतीक ध्रुव, अडिग आंतरिक विश्वास के प्रतीक प्रह्लाद, न्यायपूर्ण राज-काज के प्रतीक अंबरीष, जागृत ज्ञान के प्रतीक नारद रहते

हैं। साथ ही ज्ञानी, सिद्ध; बुद्धिमान, बुद्ध; सामंजस्य के वाहक, गण और गंधर्व भी वहाँ सहजता से एकत्रित होते हैं। यह दर्शाता है कि मनुष्य के सर्वोच्च सद्गुण और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ स्वतंत्र व्यक्तिगत उपलब्धियाँ नहीं बल्कि अनंत एकत्व की स्वाभाविक अभिव्यक्तियाँ हैं।

एते जीअ जाँ चै हहि घरी ॥

उस घर से बहुत से जीव जुड़े हैं। यह समावेशिता को दर्शाता है जिसमें कोई भी चीज़ उस सार्वभौमिक घर से बाहर नहीं है और जीवन का हर रूप उसी जीवंत व्यवस्था का हिस्सा है।

सरब बिआपिक अंतर हरी ॥

सर्वव्यापी सत्ता हर जीव के भीतर निवास करती है। यह उस आंतरिक निकटता की ओर इशारा करता है जहाँ एकता कहीं बाहर नहीं बल्कि भीतर ही है।

प्रणवै नामदेउ ताँ ची आणि ॥

विनम्रता के साथ, नामदेव कहते हैं कि केवल वही सम्मान के योग्य है। इसका अर्थ है कि जब समझ और अनुभव एक हो जाते हैं तब अंतर्दृष्टियाँ जीवन में आत्मसात हो जाती हैं और वह सत्यनिष्ठा की ऐसी जीवंत वास्तविकता बन जाती हैं जो सम्मान के योग्य होती है।

सगल भगत जा चै नीसाणि ॥५॥१॥

सभी भक्तों पर वही एक निशान या पहचान होती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सच्चे साधकों की पहचान बाहरी चिप्पी से नहीं बल्कि एकत्व के साथ जुड़ाव की साँझा छाप से होती है। (५)(१)

तत्त्व: भगत नामदेव पुष्टि करते हैं कि मानवीय गुण और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ, व्यक्तिगत गर्व के लिए नहीं होतीं। वह उस चेतना की सच्ची अभिव्यक्ति हैं जो अनंत एकत्व से जुड़ी है। जब अलग होने का भ्रम मिट जाता है तब ज्ञान, करुणा, नम्रता और प्रेम पनपते हैं। हम जितना अधिक एक-दूसरे से जुड़े होने को समझते हैं, यह मूल्य हमारे विचारों और कार्यों में उतने ही अधिक समा जाते हैं, यह उस आध्यात्मिक परिपक्वता को दर्शाता है जो हमें सामंजस्यपूर्ण इकाई के रूप में जोड़ती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com